विश्व समाज

डा० इल्तिफ़ात अहमद

मधुर सन्देश संगम
अबुल फज़ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-25

विश्व-समाज

डा० इल्तिफ़ात अहमद
एम.एस.सी. बी.टी. (अलीग)

मधुर सन्देश संगम
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव जामिआनगर, नई दिल्ली-25

मधुर सन्देश संगम प्रकाशन नं० 10

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नाम किताब : विश्व-समाज

लेखक : डा० इल्तिफ़ात अहमद

प्रकाशक : मधुर सन्देश संगम
अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव,
जामिआ नगर, नई दिल्ली-110025

मुद्रक :

हिन्दी एडीशन :

पहली बार : 1993 — 2000

मूल्य : 2.50

विश्व-समाज

आज पूरी दुनिया यह मान रही है कि जगत् का कोई एक बनाने वाला है। वही उसका अकेला हाकिम और मालिक है। उसे कोई गॉड कहता है, तो कोई ख़ुदा, कोई अल्लाह कहता है, तो कोई ईश्वर।.... बड़ी ख़ुशी की बात यह है कि सबका मतलब उसी एक से है। उसने जगत् के एक छोटे से भाग में जिसको पृथ्वी कहते हैं, आदमी का एक जोड़ा भेजा, जिसको कुछ लोग मनु और सतरोपा कहते हैं, तो कुछ लोग आदम और हव्वा और कुछ लोग ऐडम और ईव। इन भिन्न-भिन्न नामों के होते हुए भी सबका मतलब उसी एक जोड़े से है। उस जोड़े को पृथ्वी पर भेजते समय उसे साफ़-साफ़ बतला दिया गया था कि यह पृथ्वी तेरे रहने का असल स्थान नहीं है, बल्कि यह तेरा परीक्षा-स्थल है। जो व्यक्ति इस दुनिया में ईश्वर के भेजे हुए आदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करेगा, उसको मृत्यु के पश्चात् मिलने वाले जीवन (परलोक) में स्वर्ग में रखा जाएगा, जहां नाना प्रकार के सुख हैं। वहाँ आदमी जो चाहेगा, मिलेगा। वहाँ न बीमारी है, न बुढ़ापा और न मृत्यु। परन्तु जो लोग इस दुनिया में मनमाना जीवन व्यतीत करेंगे और ईश्वरीय आदेशों के विरुद्ध काम करेंगे, उनको मृत्यु के पश्चात् मिलने वाले जीवन (परलोक) में नरक में झोंक दिया जाएगा, जहाँ नाना प्रकार की पीड़ाएं और दुख: है—आग, सांप, बिच्छू, भूख-प्यास और पीप-लहू इत्यादि : वहाँ मृत्यु भी न आयेगी कि दु:ख से मुक्ति मिल सके।

आदम और हव्वा को पृथ्वी पर उतारते समय ईश्वर ने जो कुछ कहा वह अन्तिम ईश्वरीय ग्रन्थ (क़ुरआन) में पूर्ण रूप से सुरक्षित है—

> "हमने कहा कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ। फिर यदि मेरी ओर से सन्मार्ग की कोई सूचना तुम्हारे पास पहुंचे तो जो लोग मेरे उस बताये सन्मार्ग पर चलेंगे उनके लिए किसी भय और दु:ख का मौक़ा न होगा और जो उसे स्वीकार करने से इनकार करेंगे और हमारी आयतों को झुठलायेंगे वे आग (नरक) में जाने वाले हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे।"
>
> –2 : 38

आदम और हव्वा इसी आदेश के अनुसार जीवन व्यतीत करते रहे और

उनकी मृत्यु के पश्चात् भी उनकी संतान बहुत दिनों तक उसी ईश्वरीय आदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करती रही, परन्तु बाद में ईश्वरीय आदेश में स्वार्थी लोगों ने मिलावट और कमी-बेशी कर दी, जिससे वास्तविक ईश्वरीय आदेश गुम हो गये। परिणामस्वरूप आदम की सन्तान अन्धकार में भटकने लगी, तो ईश्वर ने एक-दूसरे ईशदूत द्वारा वही ईश्वरीय आदेश पुन: भेजे, लेकिन उसको भी लोगों ने बदल कर बिगाड़ दिया। इस प्रकार ईश्वर की ओर से आदेश आते रहे और दुष्ट लोग उसमें परिवर्तन करके बिगाड़ पैदा करते रहे।

मानव को एक संगठित समाज की आवश्यकता थी। ईश्वरीय आदेश गुम हो जाने से समाज का संगठन भंग हो गया।

ईश्वरीय आदेश गुम हो जाने से ईश्वर की सही धारणा भी संदिग्ध हो गयी। किसी ने सूर्य को ईश्वर माना, तो किसी ने चन्द्रमा को, तो किसी ने किसी ग्रह को। इस प्रकार लोगों के अनेक ईश्वर हो गए। पूरा देश सामूहिक जीवन में अपने राजा का आदेश मानता, किन्तु पूजा-पाठ अपने-अपने काल्पनिक ईश्वर की करता। सूर्य, चन्द्रमा और तारों की पूजा तो होने लगी, परन्तु यह सारे ईश्वर मानव के जीवन के लिये आदेश देने में असमर्थ थे। इसलिए देश का शासन तो राजाओं ने सँभाल लिया, परन्तु राजा को हर समय यह डर लगा रहता कि इतनी बड़ी जनता का शोषण आसान नहीं है। किसी भी समय जनता उसकी ग़ुलामी का फन्दा अपनी गर्दन से निकालकर आज़ाद भी हो सकती है। अत: मिस्र के राजा ने एलान किया कि मैं फ़िरऔन (सूर्य की सन्तान) हूँ। सूर्य मिस्र का देवता था। देवता की सन्तान भी तो देवता ही होती है। अत: मिस्र का राजा केवल राजा ही नहीं था, बल्कि मिस्र वालों का देवता भी था। देश का कौन-सा निवासी ऐसा पागल हो सकता है, जो अपने देवता ही से विद्रोह करे। इस प्रकार उसका राज्य स्थाई हो गया। इस नुस्ख़े को इतनी सफलता मिली कि जापान के राजा ने भी एलान कर दिया कि मैं "मिकाडो" (सूर्य की सन्तान) हूँ। वहाँ की जनता ने उसको अपना ईश्वर मान लिया। उसकी ख़ुदाई इतनी पक्की हो गई कि यदि वहाँ का कोई व्यक्ति अपने राजा के आदेश का पालन किसी कारण से पूरा न कर सकता, तो उसकी मुक्ति का केवल एक ही मार्ग था कि भरे दरबार में राजा के सामने खड़े होकर अपने ही हाथ से अपना पेट छुरी से फाड़कर अपनी हत्या कर ले। जिसको वहाँ की भाषा में 'हराकरी' कहते हैं। दूसरे महायुद्ध में जापान में

हराकरी का समाचार बराबर छपता रहा है। —हिन्दुस्तान इस में पीछे क्यों रह जाता। यहाँ भी एक क्षेत्र के राजा ने एलान किया कि मैं 'सूर्यवंशी' अर्थात् सूर्य की सन्तान हूँ, तो दूसरे क्षेत्र के राजा ने कहा कि मैं 'चन्द्रवंशी' हूँ। अर्थात् मैं चन्द्रमा की सन्तान हूँ। इस प्रकार चन्द्रवंशी और सूर्यवंशी राजाओं ने यहाँ बहुत दिनों तक राज किया है।

शोषण का यह नुस्ख़ा सफल तो बहुत रहा, फिर भी इस वर्ग को यह भय हमेशा लगा रहता कि किसी भी वक़्त कोई आदमी उसकी ख़ुदाई को चैलेंज कर सकता है और जनता को विश्वास दिला सकता है कि यह ख़ुदा का बेटा नहीं है ! यह तो फ़्लाँ और फ़्लाँ का बेटा और पोता है। इस तरह एक क्षण में पूरी जनता को बग़ावत पर उभार सकता था और शोषण का यह ढाँचा छिन्न-भिन्न हो सकता है। अत: राजा ने जनता का एका तोड़ने के लिए उन्हें वर्गों में बाँट दिया, ताकि किसी भी समय सारी जनता एक होकर राजा के विरुद्ध बग़ावत न कर सके।

इराक़ :– यहां जनता को तीन वर्गों में बांटा गया था :

(1) अमीलू (2) मिसकीनू (3) अर्दू।

*(1) **अमीलू** :– यह पूरे देश का सवर्ण वर्ग था जिसमें राजा, सेनापति और मन्दिर के पुजारी सम्मिलित थे। यही वर्ग पूरी जनता का शोषण कर रहा था।*

*(2) **मिसकीनू** :– यह समाज में दूसरे दर्जे का वर्ग था जिसका काम खेती-बाड़ी और व्यापार था।*

*(3) **अर्दू** :– तीसरा वर्ग अर्दू था। जो समाज का सबसे निचला वर्ग था और जिसका बुरी तरह शोषण हो रहा था।*

यूरोप :– यहाँ का समाज तीन वर्गों में बँटा हुआ था।

(1) बादशाह और पादरी (2) लैन्ड लॉर्ड (3) सर्फ़।

बादशाह और पादरी का वर्ग सबसे ऊँचा था और पूरे समाज का शोषण कर रहा था। सर्फ़ का वर्ग सबसे ज़्यादा पिसा हुआ था।

अरब :– यहाँ भी समाज तीन वर्गों में बँटा हुआ था (1) अरबी (2) अजमी (3) ग़ुलाम।

पूरे समाज में अरबी ही सवर्ण वर्ग था, जो पूरी जनता का शोषण कर रहा

था। गुलाम तो जानवरों से भी नीचा समझा जाता था और बाज़ारों में बिका करता था।

हिन्दुस्तान :– इस मामले में हिन्दुस्तान सबसे आगे था। यहाँ समाज को चार वर्गों में बाँटा गया था। (1) ब्राह्मण (2) क्षत्रिय (3) वैश्य (4) शूद्र।

ब्राह्मण ही समाज का सवर्ण वर्ग था और पूरे देश का शोषण कर रहा था। शूद्र सबसे निचला वर्ग था। समाज का यह वर्गीकरण सीढ़ियों के समान था। सबसे ऊपर ब्राह्मण था, जो सबका ख़ुदा बना हुआ था। इसके बाद क्षत्रिय था, जो ब्राह्मण का गुलाम और सबका ख़ुदा था। वैश्य ब्राह्मण और क्षत्रिय का तो गुलाम था, लेकिन शूद्र का ख़ुदा था। बेचारा शूद्र सबका गुलाम, परन्तु ख़ुदा किसी का भी नहीं था। इसके ज़िम्मे समाज का सबसे तुच्छ काम था।

समाज के कुछ काम तुच्छ ज़रूर होते हैं, लेकिन वे काम भी समाज के लिए आवश्यक होते हैं। ये काम किसी वर्ग से ज़बरदस्ती तो लिए जा सकते हैं, लेकिन इसके लिए कोई वर्ग ख़ुशी से तैयार नहीं हो सकता। अत: यह काम समाज के सबसे कमज़ोर वर्ग शूद्र से लिया गया। साथ-ही-साथ यह क़ानून भी बना दिया गया कि जिस वर्ग के ज़िम्मे जो काम किया गया है, वही उसका पेशा है। अपने पेशे को छोड़कर कोई आदमी दूसरा पेशा नहीं अपना सकता। इस प्रकार एक वर्ग के लिए दूसरे वर्ग के पेशे को अपनाने का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। शादी-विवाह भी लोग अपने वर्ग ही में कर सकते थे। धार्मिक पुस्तकों में भी यह लिख दिया गया था कि ब्रह्मा ने ब्राह्मण को अपने मुख से, क्षत्रिय को बाज़ू से, वैश्य को पेट से और शूद्र को पैर से पैदा किया है, ताकि शूद्र के अन्दर क्रोध की भावना दूसरे वर्गों के ख़िलाफ़ पैदा न होने पाए और शूद्र को भी सब्र हो जाए कि जब ब्रह्मा ही ने हमें पैर से पैदा करके सब नीचों-से-नीच बना दिया है, तो वास्तव में हम नीच ही हैं। इसमें किसी का दोष नहीं है। ब्राह्मण के अन्दर यह भावना पैदा हुई कि जब ब्रह्मा ने हमें अपने मुख से पैदा किया है, तो हम वास्तव में सर्वश्रेष्ठ हैं। इस प्रकार ब्राह्मण के अन्दर श्रेष्ठता की भावना (Superiority Complex) और शूद्र के अन्दर हीन भावना (Inferiority Complex) पैदा होना स्वाभाविक था। इन भावनाओं को और ज़्यादा स्थाई बनाने के लिए किताबें लिखी गईं और स्मृतियाँ भी तैयार की गईं। इन सबका परिणाम यह हुआ कि आज ब्राह्मण यह सोच भी नहीं सकता कि वह और शूद्र

सामाजिक हैसियत से बराबर भी हो सकते हैं और शूद्र के अन्दर भी यह भावना न पैदा हो सकी कि वह और ब्राह्मण समाज में बराबर हो सकते हैं।

किसी भी देश में यदि जनता के अन्दर ऊँच-नीच और छूत-छात की भावना पाई जाती हो, तो उस देश की एकता ख़तरे में पड़ जाती है। इसीलिए हमारे देश के शासन में ऊँच-नीच और छूत-छात दूर करने के लिए बहुत-से उपाए किए गये हैं। दूसरी ओर स्वयं शूद्रों ने भी ज़िल्लत के इस गड्ढे से निकलने का प्रयास किया है।

आरक्षण (Reservation) :—सरकारी नौकरियों में शूद्र के लिए स्थान आरक्षित कर दिये गये हैं। इससे शूद्र के कुछ परिवारों की आर्थिक दशा ज़रूर सुधर सकती है, लेकिन समाज में वह शूद्र-का-शूद्र ही रहेगा। जगजीवन राम का सम्बन्ध शूद्र वर्ग से ही था, वह केन्द्र में बड़े ऊँचे-ऊँचे पदों पर रहे थे। लेकिन जब मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा बनारस में लगाई गई तो गृह मन्त्री के रूप में जगजीवन राम ने उसका उद्घाटन किया। किन्तु जब वह वहाँ से चले गए तो दूसरे दिन बनारस के पंडितों ने प्रतिमा को गंगा जल से धोया कि एक शूद्र ने उसे छू दिया था और वह अशुद्ध हो गयी थी। Reservation शूद्र की समस्या का हल नहीं है।

अर्न्तजातीय विवाह (Inter Cast Marriage) :— ऊँची और नीची जाति में आपसी शादी-विवाह पर ज़ोर दिया गया और बहुत-से लालच भी दिए गए, लेकिन जिन ऊँची जाति के लोगों ने नीची जाति में शादी की तो इससे नीची जाति वाला ज़रा भी ऊपर न उठ सका, बल्कि ऊँची जाति वाले को भी ले डूबा। ऊँची जाति वाला नीचे गिर गया।.... ऊँची और नीची जाति का आपसी शादी विवाह इस समस्या का हल नहीं साबित हो सका।

बौद्धमत का स्वीकार करना :— बेचारे बहुत-से शूद्रों ने ऊँचा उठने के ध्येय से अपना धर्म ही बदल डाला और बौद्धमत स्वीकार कर लिया। आज यह धर्म (मज़हब) अपना महत्व खो चुका है। बेचारे शूद्र को क्या ऊँचा उठाता, वह तो बौद्ध होने के बाद भी शूद्र ही रहा। बौद्धमत स्वीकार करना भी इस समस्या का हल नहीं है।

ईसाई धर्म :— ईसाई मिश्नरियों के उकसाने से कुछ शूद्र ईसाई हो गये.

लेकिन ईसाइयों ने भी उन्हें ऊँचा नहीं उठाया। उन्होंने उसे ईसाई समाज का अंग भी नहीं बनाया। वह शूद्र का शूद्र ही रहा। बेचारे को अपने गिरजा में भी प्रवेश का अधिकार नहीं दिया। उसका गिरजा अलग कर दिया। मरने के बाद भी उन्हें अपने क़ब्रिस्तान में दफ़न करने की इजाज़त नहीं दी और उसका क़ब्रिस्तान भी अलग कर दिया। ईसाई मत का स्वीकार करना भी इस समस्या का हल नहीं है।

वर्ण आश्रम के अतिरिक्त और बहुत-सी चीज़ें हैं, जिन्होंने मानव-जगत को टुकड़ियों में बाँट रखा है। जैसे रंग, नस्ल, भाषा आदि सम्बन्धी पक्षपात। इन तमाम चीज़ों ने मानव-जगत को टुकड़ियों में ही बाँटा है और उनके बीच नफ़रत की गहरी खाई ही तैयार की है।

अन्तिम ईशदूत

ईश्वर ने जितनी चीज़ें बनाई हैं, उनमें मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ (अशरफ़ुल मख़लूक़ात) है। पहले ही दिन से ईश्वर की यह योजना थी कि पूरी मानव-जाति को एक ईश्वर, एक ईशदूत और एक जीवन-सिद्धान्त द्वारा एक प्लेटफार्म पर जमा कर दिया जाए, ताकि सारे भेद-भाव दूर हो जाएं और मानव वास्तव में इस पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ बन कर रहे। परन्तु आरम्भ में यह सम्भव नहीं था। यातायात के अच्छे साधन उपलब्ध नहीं थे। कहीं दो देशों के बीच में समुद्र था, तो कहीं पहाड़, कहीं मरुस्थल था, तो कहीं जंगल। जिनका पार करना उस समय के आदमी के लिए सम्भव नहीं था। इसीलिए ईश्वर ने अपना आदेश हर क़ौम में अलग-अलग भेजा और हर ईशदूत ने उस आदेश को अपनी क़ौम की भाषा में पेश किया। जब दुनिया काफ़ी उन्नति कर गई, तो ईश्वर ने अपने मनसूबे के अनुसार सारी दुनिया के लिए एक ईशदूत और एक ईश्वरीय ग्रन्थ भेजने का निश्चय किया। इस मनसूबे की राह में तीन चीज़ें विचाराधीन थीं। (1) अन्तिम ईशदूत का प्रचार केन्द्र (2) बिना राजा का देश, (3) ईश्वरीय ग्रन्थ की सुरक्षा।

(1) अन्तिम ईशदूत का प्रचार-केन्द्र :– दुनिया में कुल सात महाद्वीप हैं, परन्तु तीन ही ऐसे महाद्वीप हैं जो आपस में मिले हुए हैं—एशिया, अफ्रीका और यूरोप। इन तीनों के संगम पर प्रचार-केन्द्र बनाना उचित था। मानचित्र (नक़्शा) देखने से साफ़ ज्ञात होता है कि मध्यपूर्व (Middle East) ही वह क्षेत्र है, जहां से तीनों महाद्वीपों में प्रचार हो सकता है और यही उचित केन्द्र बन सकता है।

(2) बिना राजा का देश :– जब किसी देश में ईशदूत, ईश्वरीय सिद्धान्त का प्रचार करने गया, तो वहाँ पहले से कोई-न-कोई राजा अवश्य मौजूद रहा है। ईशदूत के आते ही राजा चौकन्ना हो जाता। क्योंकि अगर ईशदूत अपने मिशन में सफल होता है तो उसका तख़्ता उलट जायेगा। अतः वह तुरन्त मैदान में आ जाता और ईश-दूत का विरोधी बन जाता। अन्तिम ईशदूत के लिए भी राजा बहुत बड़ा ख़तरा था। यदि प्रचार-केन्द्र में कोई राजा रहा होता, तो ईशदूत के लिए अपने मिशन में सफलता पाना कठिन हो जाता।

पूरे मध्यपूर्व में उस समय केवल अरब ही वह देश था, जहाँ कोई राजा नहीं

था। पूरा अरब छोटे-छोटे क़बीलों में बँटा हुआ था। हर क़बीले का सरदार जनता का ज़िम्मेदार था। ईश्वर ने अपने अन्तिम दूत को अरब के सबसे प्रसिद्ध नगर मक्का के सबसे बड़े क़बीले क़ुरैश के सरदार के घर पैदा किया। किसी अन्य क़बीले के लोग इस ईशदूत पर हाथ नहीं उठा सकते थे, इसलिए कि क़ुरैश का क़बीला सबसे बड़ा था। क़ुरैश के लोग भी आप (सल्ल०) पर हाथ नहीं डाल सकते थे, क्योंकि ईशदूत उनके क़बीले के सरदार के घर पैदा हुआ था। इस प्रकार अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को पूरा अवसर मिल गया और केवल 23 साल में पूरे अरब में ईश्वरीय आदेशों के अनुसार समाज और स्टेट का निर्माण करके ईश्वरीय जीवन-सिद्धान्त का एक नमूना पेश किया।

(3) **ईश्वरीय ग्रन्थ की सुरक्षा** :– जब से मानव ने पृथ्वी पर क़दम रखा है, ईश्वर की ओर से मार्ग-दर्शन के लिए ईश्वरीय ग्रंथ उतरते रहे हैं। आरम्भ में लोग पढ़े-लिखे न थे। प्रेस भी नहीं था। लोग काग़ज़ बनाना भी नहीं जानते थे। अत: ईश्वरीय ग्रंथ का सुरक्षित रखना कठिन था। दूसरी तरफ़ चालाक लोगों ने देखा कि ईश्वरीय आदेशों के होते हुए जनता का शोषण सम्भव नहीं है। अत: चालाक लोगों ने ईश्वरीय आदेशों में हेर-फेर कर दिया। इस प्रकार ईश्वर की ओर से ईश्वरीय आदेश बराबर आते रहे और चालक लोग उसमें परिवर्तन करके उसे बिगाड़ते रहे। अन्तिम ईशदूत को भेजते समय यह भी एक योजना थी कि ईश्वरीय ग्रंथ की सुरक्षा का क्या प्रबन्ध किया जाए। अब कोई ईशदूत आने वाला नहीं है। अगर ईश्वरीय ग्रंथ विकृत हो गया तो क़ियामत तक दुनिया अन्धकार में भटकती रहेगी।

अब तक हर ईशदूत को ईश्वरीय आदेश ग्रंथ के रूप में दिया गया था, परन्तु अन्तिम ईशदूत के मामले में यह रीति बदल दी गई और पूरा ग्रंथ एक साथ देने के बजाय समय-समय पर ग्रंथ की कुछ आयतें (श्लोक) वह्य (प्रकाशना) के द्वारा अन्तिम ईशदूत के पास भेजी गयीं। उसने तुरन्त कातिब (मुंशी) द्वारा लिखवा दिया। जो लोग पढ़ना-लिखना जानते थे ईशदूत से पूछ कर तुरन्त लिख लिया करते थे और जो लोग पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे, ज़ुबानी याद कर लिया करते थे। इस प्रकार थोड़ा-थोड़ा करके ईश्वरीय आदेश आते रहे और 23 साल में पूरा ग्रंथ उतरा। उस समय एक ग्रंथ ईशदूत का तैयार किया हुआ मौजूद था और जो लोग साथ-साथ लिख रहे थे, उनका भी ग्रंथ था

और हज़ारों आदमियों को ज़बानी याद था, जिन्हें हाफ़िज़ कहते हैं। इस प्रकार अन्तिम ईशग्रंथ एक साथ तीन साधनों से सुरक्षित किया जा रहा था। अब किसी के लिए सम्भव न था कि उसमें परिवर्तन कर सके। यह भी प्रबन्ध किया गया है कि हर साल 'रमज़ान' के महीने में हाफ़िज़ पूरा क़ुरआन पढ़ता है और लोग उसको सुनते हैं, ताकि यदि कोई ग़लती हो तो पकड़ ली जाए। आज तक यह सिलसिला जारी है। और यही समय था जब प्रेस का अविष्कार हुआ और लोग काग़ज़ बनाना भी जान गए। अब तो क़ुरआन की लाखों कापियाँ छपकर पूरी दुनिया में फैल गई हैं। इस्लामी हुकूमत भी क़ुरआन की सुरक्षा की ज़िम्मेदार थी, यह हुकूमत सैकड़ों बरस तक रही। ऐसी दशा में क़ुरआन में परिवर्तन कैसे हो सकता था। अब कौन कह सकता है कि क़ुरआन में कोई परिवर्तन हुआ है। आज क़ुरआन के अतिरिक्त जितने भी ईश्वरीय ग्रंथ हैं, उनमें कोई भी सुरक्षित नहीं हैं। कितने ईश्वरीय ग्रंथ हैं, जो सौ-सौ वर्ष तक ज़बानी ही चलते रहे। कोई ईश्वरीय ग्रंथ है तो, लेकिन लाने वाले ईशदूत का पता नहीं। कहीं ईशदूत तो है, परन्तु ग्रंथ का पता नहीं। अतः केवल क़ुरआन ही वह ईश्वरीय ग्रंथ है, जो अपनी असल शक्ल में मौजूद है और उसको लाने वाले ईश-दूत की जीवनी भी सुरक्षित है। इस प्रकार क़ुरआन के केवल शब्द ही सुरक्षित नहीं हुये, बल्कि उसके अर्थ और मतलब भी सुरक्षित कर लिए गए।

विश्व-समाज की स्थापना

अन्तिम ईश-दूत (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) को ईश्वरीय जीवन-सिद्धांत (दीने इस्लाम) ईश्वर की ओर से मिला था। आपने उसके अनुसार व्यक्ति-समाज और स्टेट का निर्माण किया और दीने इस्लाम को व्यवहारत: स्थापित कर दिया और विश्व-समाज की नींव डाल दी। आपके दुनिया से चले जाने के बाद 'चार ख़ुलफ़ाए राशिदीन' ने उस समय की सभ्य-दुनिया के बहुत बड़े क्षेत्र पर 'दीने इस्लाम' स्थापित कर दिया और उसके माध्यम से विश्व-समाज का अति सुन्दर नमूना दुनिया के सामने प्रस्तुत कर दिया।

ऐसा समाज जहाँ मानव को वर्गों में बाँट कर ऊँच-नीच और छूत-छात का वातावरण पैदा कर दिया गया हो, वह समाज कहलाने के योग्य नहीं है। विश्व-समाज का स्वप्न उस समय तक वास्तविक रूप धारण नहीं कर सकता, जब तक समाज से ऊँच-नीच और छूत-छात की भांवना मिट न जाए और सारे मनुष्य भाई-भाई बनकर हँसी-ख़ुशी जीवन व्यतीत न करने लगें। अत: अन्तिम ईश-दूत (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) ने वर्ण-भेदभाव की लानत को दूर करने की ओर सबसे पहले ध्यान दिया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जानते थे कि वर्ण-व्यवस्था का रोग बहुत पुराना है और उसको धार्मिक रंग भी दे दिया गया है। शताब्दियाँ बीत गईं और समाज का निचला वर्ग सबसे ज़लील बना हुआ है। वह हर जगह पैरों के नीचे रौंदा जा रहा है। अब उसके अन्दर हीन भावना (Inferiority Complex) पैदा हो चुकी है। दूसरी ओर सवर्ण वर्ग अपने को सबसे ऊँचा समझता है और उसके अन्दर भी श्रेष्ठता की भावना Superiority Complex पैदा हो गयी है। Complex चाहे Superiority का हो या Inferiority का आसानी से दूर नहीं किया जा सकता और इस लानत को दूर किये बिना विश्व-समाज की नींव नहीं डाली जा सकती।

इस वर्ण-आश्रम की लानत को समाप्त करने से पहले एकेश्वरवाद, ईश-दूतत्व और परलोक की धारणा लोगों के सामने पेश की गयी और इसके पक्ष में पूरे ब्रह्माण्ड से इतने ज़ोरदार सबूत पेश किये गए कि यह तीनों धारणाएँ लोगों के हृदय में उतर गयीं। तब इस सम्बन्ध में ईश्वरीय आदेश पेश किया

गया—

"लोगो ! हमने तुमको एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और फिर तुम्हारी जातियाँ और बिरादरियाँ बना दीं, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो ! वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुम में सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है, जो तुम में सबसे अधिक परहेज़गार है।" —49 : 13

अन्तिम ईश-दूत, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अन्तिम हज के दिन भाषण देते समय कहा—

"किसी अरबी को किसी अजमी (ग़ैर अरबी) पर कोई बड़ाई और श्रेष्ठता नहीं है और न किसी अजमी को अरबी पर। न किसी गोरे को किसी काले पर और न काले को गोरे पर, सिवाय नेकी के। और ख़ानदानी बुनियाद पर कोई बड़ाई नहीं है।"

क़ुरआनी आदेश और ईश-दूत के कथन द्वारा यह बात बताई गई है कि सारे मनुष्य एक ही नस्ल से हैं। यह भिन्न-भिन्न नस्लें, रंग, भाषाएं मानव-जगत् के विभाजन के लिए कोई उचित कारण नहीं हैं।

जब क़ुरआन और ईश-दूत की बातें दिमाग़ों में उतर गयीं, तो शताब्दियों का जमा जमाया ग़लत विचार दिमाग़ों से निकल गया। जो लोग ईश्वर पर ईमान ला चुके थे और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को ईश-दूत मान चुके थे और क़ुरआन को ईश्वरीय ग्रंथ के रूप में सीनों से लगा चुके थे, यह बात उनके दिमाग़ में बैठ गयी कि जब सारे मानव एक ही माता-पिता की सन्तान हैं, तो सब आपस में भाई-भाई हैं। जन्म की बुनियाद पर कैसे एक शरीफ़ और सज्जन और दूसरा ग़ैर-शरीफ़ और अभद्र हो सकता है।

हज़रत मुहम्मद साहब ने दीने इस्लाम के आधार पर जिस समाज का निर्माण किया, उसमें अरबी, फ़ारसी, शामी, मिस्री, तुर्की, चीनी, हिन्दी, यूनानी, इण्डोनेशियन, अफ़्रीकी इत्यादि हर क़ौम और हर नस्ल के लोग जमा हो गये थे। यह समाज एक दिन के लिए भी क़ौमी समाज न था, बल्कि सैद्धान्तिक (Ideological) समाज था। इसमें हर क़ौम के व्यक्ति बराबरी की हैसियत से सम्मिलित हुए थे। प्रेम के सूत्रों ने उन्हें आपस में जोड़ दिया था। हर एक के अन्दर यह भावना पैदा हो गयी, कि हम सब एक ही समाज के व्यक्ति हैं।

ऊँच-नीच और छूत-छात का नामोनिशान मिट चुका था। यह विशेषताएँ हैं जो आज तक किसी मानव-समाज को नसीब नहीं हुयीं। वास्तव में यह दीने इस्लाम की देन थी।

इस्लाम ने योग्यता की क़द्र की है। चाहे वह अपनों में हो या दूसरों में। अत: इस्लामी समाज ने ऐसे सब लोगों से पूरा-पूरा लाभ उठाया है। अबू हनीफ़ा, शाफ़ई, मालिक, इब्ने हम्बल, अलख़लील, अलकुन्दी, अलफ़रा, अल-फ़ाराबी, इब्ने रुश्द इत्यादि, भिन्न-भिन्न क़ौमों के लोग थे। सबकी योग्यता की क़द्र की गयी और इनका योगदान इस्लामी-समाज को मिला।

ईश्वरीय आदेशों और ईश-दूत के कथन का प्रभाव यह हुआ कि शताब्दियों की छूत-छात की जमी जमाई लानत समाप्त हो गई। अरब का ग़ुलाम जो आज के शूद्रों से भी नीचा था, वह तो बाज़ारों में बिका करता था। लेकिन इस्लामी समाज का यह प्रभाव पड़ा कि वह इस्लामी समाज में बराबर का नागरिक हो गया और ऊँच-नीच की सारी भावनाएँ समाप्त हो गयीं।

० इस्लामी स्टेट में सबसे ऊँचा पद ख़लीफ़ा को दिया जाता है। ख़लीफ़ा 'हज़रत उमर फ़ारूक़' ने मरते समय कहा कि, "यदि आज होज़फ़ा के ग़ुलाम सालिम जीवित होते तो मैं उन्हीं (रज़ि०) को ख़लीफ़ा बनाता।"— सालिम की ग़ुलामी ने उनके आदर में कोई कमी नहीं की।

० शादी-विवाह में ज़ात-पात की समस्या बड़ी कठिन हो जाती है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी फूफी की लड़की का विवाह एक ग़ुलाम से कर दिया था, लेकिन समाज में कोई उथल-पुथल नहीं हुआ।

० इस्लाम से पहले मदीना वाले अपने को बहुत ऊँचा समझते थे और मक्का वालों से अपनी लड़की के साथ शादी करना पसन्द नहीं करते थे। एक बार मक्का के एक बहुत बड़े आदमी ने मदीना की एक लड़की से शादी करनी चाही। मदीना वालों ने इनकार तो नहीं किया, लेकिन यह शर्त लगा दी कि लड़की मक्का नहीं जाएगी, उसको मदीना में रहना होगा। इस्लाम आने के बाद वही मदीना था जहाँ 'हज़रत बिलाल (रजि०)' ने मस्जिद में एलान किया कि मैं अपने भाई की शादी करना चाहता हूँ, लेकिन लोग सुन लें मैं अरबी नहीं हूँ, अजमी हूँ, मैं आज़ाद नहीं हूँ, ग़ुलाम हूँ। मैं अमीर नहीं हूँ, ग़रीब हूँ। इस पर भी

मदीने के बहुत-से रईस अपनी लड़की के साथ शादी करने को तैयार हो गए।

अमेरीका में अफ्रीकी नस्ल के लोगों का प्रसिद्ध लीडर "मेल्कम एक्स" मुसलमान होने के बाद जब हज को गया तो उसने देखा कि एशिया, यूरोप, अफ्रीका, अमेरीका हर जगह, हर नस्ल और हर रंग के मुसलमान एक ही वस्त्र में एक ख़ुदा के घर की ओर जा रहे हैं। एक साथ काबे का तवाफ़ कर रहे हैं। एक ही साथ नमाज़ पढ़ रहे हैं और एक ही ज़ुबान में लब्बैक-लब्बैक कह रहे हैं। उनमें किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं है, तो वह बोल उठा, "यह है रंग और नस्ल की समस्या का हल।" बहुत-से ग़ैर-मुस्लिम जिनमें तअस्सुब (द्वेष भावना) नहीं है यह बात मानते हैं कि ऊँच-नीच, छूत-छात, रंग और नस्ल की समस्या को जिस सफलता के साथ इस्लाम ने हल किया है कोई दूसरा जीवन-सिद्धांत हल नहीं कर सकता।

हुकूमत और सल्तनत :– दीने इस्लाम से पहले जनता को यह हक़ नहीं प्राप्त था कि वह अपने हाकिमों की भी आलोचना कर सके। हाकिम और उसकी जनता का सम्बन्ध मालिक और ग़ुलाम का था। जब इस्लामी राज्य स्थापित हुआ तो यह घोषणा की गई कि जनता को अपने हाकिम के कामों पर आलोचना का अधिकार है।

इतिहास में पहली बार यह देखने में आया कि जनता के एक व्यक्ति ने स्टेट के सबसे बड़े अधिकारी की आलोचना कर दी। इस्लामी स्टेट के सबसे बड़े अधिकारी (ख़लीफ़ा) 'हज़रत उमर फ़ारूक़' ख़ुत्बा (भाषण) देने के लिए खड़े हुए और इतना ही कहा था कि "लोगो! मेरी बात सुनो और उस पर अमल करो।" इतने में आम लोगों में से एक साधारण-सा व्यक्ति खड़ा हुआ और भरी सभा में कहने लगा, "न हम आपकी बात सुनेंगे और न उसपर अमल करेंगे, जब तक यह न बताएं कि सब लोगों को स्टेट की ओर से एक-एक चादर मिली थी। हम लोगों का कुर्ता एक चादर में नहीं बन सका, आप जैसे लम्बे चौड़े आदमी का कुर्ता एक चादर में कैसे बन गया?" यह सुनते ही ख़लीफ़ा मिम्बर पर से उतर आया और अपने लड़के 'अब्दुल्लाह बिन उमर' से कहा कि इनका उत्तर दो। लड़के ने कहा कि आज जुमा का दिन था। ख़लीफ़ा को जनता के सामने ख़ुत्बा (भाषण) देना था और उनका कुर्ता बहुत फटा हुआ था। अतः मैंने अपनी चादर भी इनको दे दी, तो दो चादरों में इनका कुर्ता बना और ये उसी को

पहनकर आए हैं। उस आदमी ने कहा, "अब कहिए, सुनेंगे और उस पर अमल भी करेंगे।" ख़लीफ़ा ने उस आदमी को न फाँसी दी, न जेल भेजा और न देश निकाला दिया। लोग ख़लीफ़ा की सफ़ाई से संतुष्ट हो गए और ख़लीफ़ा ने अपना ख़ुत्बा आरम्भ कर दिया।

'हज़रत उमर (रज़ि०)' की ख़िलाफ़त के समय मिस्र के गवर्नर उमर बिन आस के लड़के मुहम्मद ने एक मिस्री को कोड़े मार दिए। उस मिस्री ने मदीना जाकर ख़लीफ़ा हज़रत उमर से शिकायत कर दी। ख़लीफ़ा ने मिस्र के गवर्नर और उनके लड़के मुहम्मद दोनों को तलब किया और जब वे दोनों हाज़िर हुए तो ख़लीफ़ा ने मिस्री के हाथ में कोड़ा देकर कहा कि गवर्नर के बेटे को मेरे सामने मारो। जब वह अपना बदला लेकर कोड़ा वापिस करने लगा तो ख़लीफ़ा ने कहा कि एक कोड़ा इन गवर्नर साहब को भी मारो। ख़ुदा की क़सम इनका बेटा तुम्हें कदापि न मारता, अगर उसे अपने बाप पर गर्व न होता।

लेकिन मिस्री ने कहा, "जिसने मुझे मारा था, उससे मैंने बदला ले लिया।" ख़लीफ़ा ने गवर्नर से कहा कि तुमने लोगों को कब से अपना ग़ुलाम बना लिया है, हालांकि उनकी माओं ने उन्हें आज़ाद जना था।

इस्लामी हुकूमत जब अपनी असल शान से चल रही थी, तो उस समय हाल यह था कि ख़लीफ़ा के ख़िलाफ़ भी दावे किए जाते थे और ख़लीफ़ा को अदालत में हाज़िर होना पड़ता था। यदि ख़लीफ़ा को किसी के ख़िलाफ़ शिकायत होती, तो वह अपने विशिष्ट अधिकारों से काम लेकर अपनी शिकायत स्वयं दूर नहीं करता था, बल्कि उसे भी अदालत में जाना पड़ता था।

इस्लामी जीवन-सिद्धान्त स्थापित होने से पहले यह आम रिवाज था कि बड़े लोग जब कोई जुर्म करते तो उन्हें छोड़ दिया जाता और वही जुर्म कोई साधारण आदमी करता, तो उसे सज़ा दी जाती थी। इस्लामी जीवन-सिद्धांत स्थापित होने के बाद एक बड़े घर की लड़की ने चोरी की। लोगों ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से सिफ़ारिश की कि उसे सज़ा न दी जाये, उसका हाथ न काटा जाए, क्योंकि वह बड़े घर की लड़की है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) बहुत नाराज़ हुए और कहा कि पिछली क़ौमें इसीलिए तबाह हुईं कि बड़े लोग जब कोई जुर्म करते तो छोड़ दिये जाते और छोटा आदमी कोई जुर्म करता तो उसे सज़ा दे दी जाती। मेरी लड़की फ़ातमा भी अगर चोरी करती, तो मैं उसका भी हाथ काट देता।

मानव-अधिकार (Fundamental Human Rights) :– सारी दुनिया को छोटे-छोटे सामाजिक टुकड़ों में बाँटने के बजाय सबको मिलाकर एक 'विश्व-समाज' बना देने की भावना बड़ी सुन्दर है, लेकिन अगर समाज के व्यक्तियों को उनका अधिकार न मिला तो ऐसे विश्व-समाज से मानव को क्या मिला और यह काग़ज़ की नाव कब तक चल सकती है। अत: मानव को उनका अधिकार दिए बिना 'विश्व-समाज' सम्भव नहीं है।

आज यूरोपीय देश बड़े गर्व से कहते हैं कि दुनिया को मानव-अधिकार हमने दिया है। इंग्लैण्ड के मैग्ना कार्टा (Magna Carta) इन्क़िलाबे फ्रांस का मानव-अधिकार और U.N.O. के प्रस्ताव द्वारा मानव को जो कुछ दिया गया उसकी आयु दो-तीन सौ वर्ष से अधिक नहीं है। जो कुछ दिया गया वह केवल सुन्दर इच्छाओं से ज़्यादा कुछ नहीं। इनके पीछे कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो लोगों को उस पर चलने के लिए मजबूर करे। यह भी एक वास्तविकता है कि जब ये लोग मानव-अधिकार की बातें करते हैं, तो उनके दिमाग़ में अपने शहर का आदमी, या अपनी जाति का आदमी या गोरी चमड़ी वाले होते हैं। साधारण जनता को यह अधिकार न उन्होंने कभी दिया है और न आज देने को तैयार हैं। और अगर कभी साधारण जनता को ये अधिकार काग़ज़ पर दिए भी जाते हैं, तो ज़मीन पर छीन लिए जाते हैं।

यह तो केवल इस्लाम ही है, जिसने आज से १४०० वर्ष पूर्व यह अधिकार मानव को दिया था। जो व्यक्ति ईश्वर, ईश-दूत और मृत्यु के पश्चात् जीवन पर ईमान रखता हो वह लोगों को मानव-अधिकार देने में कभी आना-कानी नहीं कर सकता।

मानव-अधिकार में सबसे मुख्य और प्रथम अधिकार यह है कि 'मानव को जीने का अधिकार दिया जाए।' क्या दुनिया नहीं जानती की किस प्रकार गोरी चमड़ी वालों ने आस्ट्रेलिया में वहाँ के निवासियों का शिकार करके उन्हें समाप्त कर दिया। गोरों के लिए पूरे महाद्वीप को ख़ाली करा लिया। उत्तरी अमेरीका के रेड इन्डियन्स (Read Indians) को मार डाला और जो बचे उनको एक क्षेत्र में क़ैद कर दिया। अफ्रीक़ा के अन्दर घुस कर कालों का शिकार किया।

मानव को जीने का हक़ तो केवल इस्लाम ने दिया है। उसने बतलाया कि व्यक्ति जीने का हक़ रखता है। क़ुरआन कहता है–

"जिसने किसी व्यक्ति को किसी के ख़ून का बदला लेने या धरती में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और कारण से मार डाला, उसने मानो सारे मानव की हत्या कर दी और जिसने किसी के प्राण बचाए उसने मानो सारे मानव को जीवन दान किया।" –5 : 32

"किसी जान को न मारो जिसे अल्लाह ने हराम किया है, सिवाय इसके कि हक़ और इन्साफ़ को यही अपेक्षित हो।" –17 : 33

इस्लाम में यह हक़ मानव को मानव की हैसियत से दिया गया है। चाहे वह अपनी क़ौम का हो या दूसरी क़ौम का। मित्र क़ौम का हो या शत्रु की क़ौम का। अपने मज़हब का हो या दूसरे मज़हब का। मानव के मानव होने की हैसियत से यह उसका हक़ है। इस्लाम में किसी मानव की हत्या करना, जितना बड़ा पाप है, उसका प्राण बचाना उतना ही बड़ा पुण्य है। कोई चाहे बीमारी से मर रहा हो या ज़ख़्मी हो, भूख-प्यास से मर रहा हो या पानी में डूब रहा हो, उसकी जान बचाने की कोशिश करना प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है।

"और उनके मालों में हक़ है मांगने वालों और उनके लिए जो पाने से रह गए थे।" —कुरआन, 70 : 24-25

"अल्लाह के प्रेम में मोहताज और अनाथ और क़ैदी को खाना खिलाते हैं।" —कुरआन, 76 : 8

इस्लाम में औरत की पाकदामनी और इस्मत (नारीत्व) की सुरक्षा उसका हक़ है। यह हक़ केवल इस्लाम ने उसे दिया है। इस्लाम में ज़िना (Rape) बहुत बड़ा पाप है और उसकी सज़ा भी बहुत सख़्त है। दुनिया के किसी क़ानून में राज़ी-ख़ुशी ज़िना (Rape) पाप नहीं है। ब्याही औरत के साथ ज़िना करने में जो सज़ा दी जाती है, वह ज़िना की सज़ा नहीं है, बल्कि उस Contract को तोड़ने की सज़ा है, जो एक मर्द और एक औरत के बीच विवाह के समय होता है। अत: यह हक़ भी केवल इस्लाम ने दिया है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत-से अधिकार दिए हैं। यह सारे अधिकार केवल काग़ज़ की शोभा ही नहीं हैं बल्कि अमली हैं।

सामाजिक न्याय (Social Justice) :– विश्व-समाज बना देना तो सरल है,

लेकिन अगर व्यक्ति को मूल अधिकार और सामाजिक न्याय न मिले तो ऐसा व-समाज कितने दिन चल सकता है।

दुनिया में सामाजिक न्याय तो इस्लाम के पास है। जो लोग यह कहते हैं, "इस्लाम में भी सामाजिक न्याय नहीं है" वह एक ग़लत बात कहते हैं। सही बात यह है कि 'इस्लाम ही में सामाजिक न्याय है।' इस्लाम वह दीन है जो ईश्वर ने मानव के मार्गदर्शन के लिए भेजा है। मानव के अन्दर न्याय क़ायम करना और यह तय करना कि क्या न्याय है और क्या अन्याय, मानव का काम नहीं है, बल्कि ईश्वर का काम है। दूसरा कोई यह अधिकार नहीं रखता कि न्याय और अन्याय की बुनियाद स्थापित करे और किसी में यह योग्यता भी नहीं है कि मानव स्वयं अपना मालिक बने। इस ब्रह्माण्ड में उसकी हैसियत ईश्वर के प्रजा की है। अत: न्याय स्थापित करना उसका अपना काम नहीं है, बल्कि उसके ईश्वर का काम है। क़ुरआन कहता है—

"हमने अपने रसूलों (ईश-दूतों) को रोशन निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ान (तुला) नाज़िल की, ताकि मानव न्याय पर क़ायम हो।" –57 : 25

न्याय, ईश्वर और उसके ईश-दूत के अतिरिक्त किसी के पास नहीं है। न्याय इस्लाम से अलग किसी चीज़ का नाम नहीं है।

फ़्रांस की क्रान्ति (French revolution) ने व्यक्ति को इतना अधिक अधिकार दे दिया कि स्टेट व्यक्ति के हाथों में खिलौना बन गयी— और जनता को सामाजिक न्याय न मिल सका।—कम्युनिज़्म ने स्टेट को इतना ज़्यादा अधिकार दे दिया था कि व्यक्ति मशीन के बेजान पुर्ज़ों के समान होकर रह गया— और जनता को सामाजिक न्याय न मिल सका। इस्लाम ने व्यक्ति और स्टेट के बीच ऐसा संतुलन पैदा कर दिया कि न व्यक्ति को वह आज़ादी ही मिल सकी, जिससे वह स्टेट के कामों में बाधा डाल सके और न स्टेट को यह अधिकार दिए गए कि व्यक्ति की आज़ादी छिन जाए और वह स्टेट के अन्दर मशीन के बेजान पुर्ज़ों के समान हो जाए।— सामाजिक न्याय इस्लाम ही में है।

यह था वह ईश्वरीय जीवन-सिद्धांत (दीने इस्लाम) जिसमें भिन्न-भिन्न देशों, क़ौमों, नस्लों और रंगों के लोग जमा हो गए थे। न कोई ऊँच-नीच थी और न

किसी प्रकार की छूत-छात, सब बराबरी के स्तर पर मिले थे। प्रत्येक व्यक्ति को मूल अधिकार मिल रहा था और सामाजिक न्याय क़ायम था। हर क्षेत्र में शान्ति थी, लोग भाई-भाई के समान प्रेम का जीवन व्यतीत कर रहे थे। अधिकारी वास्तव में जनता के सेवक थे और जनता को अपने अधिकारियों की आलोचना का पूर्ण अधिकार प्राप्त था।

यह सारी बातें इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हैं। जिन्हें पढ़कर हमारे बुद्धिजीवी बोल उठे—

गाँधी जी ने कहा, "जब हमारा देश स्वतंत्र होगा, तो हम भी यहाँ वैसा ही राज स्थापित करेंगे, जैसा अबू बक्र सिद्दीक़ और उमर फ़ारूक़ ने क़ायम किया था।"

जय प्रकाश नारायण ने पटना मेडिकल कालेज के राजेन्द्र प्रसाद हाल में सीरत पर भाषण देते हुए कहा, "अगर आज दुनिया के मुसलमान ग़फ़लत के पर्दे चाक करके खुले मैदान में आ जाएं और इस्लामी सिद्धान्तों पर अमल करें तो सारी दुनिया का मज़हब इस्लाम हो सकता है।"

रविन्द्रनाथ टैगोर जिनका बनाया हुआ राष्ट्रगान है, कहते हैं, "वह समय दूर नहीं जब इस्लाम अपनी अकाट्य सच्चाई और आध्यात्म के द्वारा सब पर ग़ालिब आ जायेगा और हिन्दू मज़हब पर भी ग़ालिब आ जायेगा और हिन्दुस्तान में एक ही मज़हब होगा और वह इस्लाम होगा।"

बर्नाड शॉ ने कहा, "आने वाले सौ साल में हमारी दुनिया का मज़हब इस्लाम होगा, मगर मौजूदा दौर के मुसलमानों का इस्लाम नहीं, बल्कि वह इस्लाम होगा जो मुहम्मद साहब के ज़माने में ज़ेहनों और दिमाग़ों में बैठ गया था।"

नेपोलियन बोना पार्ट ने कहा, "मुझे उम्मीद है कि वह समय दूर नहीं जब मैं इस योग्य हो जाऊँगा कि दुनिया के सारे देशों के विद्वानों, पढ़े-लिखे लोगों को एकत्रित कर दूँ और उनकी सहायता से क़ुरआन की बुनियाद पर एक ऐसा निज़ामे हुकूमत क़ायम कर दूँ, जो सत्य है और मानवता को सफलता के मार्ग पर ले जा सकता है।

ईश्वरीय जीवन-सिद्धान्त पर आधारित समाज टूट गया :– दीने इस्लाम

और उस पर आधारित विश्व-समाज बड़ी शान से चल रहा था कि यकायक वह समाज टूट-फूट का शिकार हो गया और विश्व-समाज छिन्न-भिन्न हो गया।

ऐसा क्यों हुआ?..... इसको तो ईश्वर हीं जान सकता है। इतना हम अवश्य जानते हैं कि जगत् में ईश्वर की मर्ज़ी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता और ईश्वर की मर्ज़ी अललटप भी नहीं होती, बल्कि एक मनसूबे के अन्तर्गत होती है। ईश्वरीय मनसूबे बड़े लम्बे होते हैं।— हज़ारों साल के होते हैं।

मानव में यह एक कमज़ोरी है कि जो चीज़ उसको बिना मेहनत के मिल जाती है, उसकी क़द्र वह कम ही करता है। दीने इस्लाम और उसका विश्व-समाज आसानी से बन गया और बड़ी सफलता से चल रहा था। अत: बाद के लोगों के दिलों मे उसकी वह क़द्र पैदा न हो सकी, जो होनी चाहिए थी।

ईश्वर को मालूम है कि दीन एक आवश्यकता है, उसके बिना गाड़ी एक दिन भी नहीं चल सकती। मानव एक दीन (जीवन-पद्धति) बनाएगा। मानव का बनाया दीन न कभी सफल हुआ है और न हो सकता है। मानव बिगड़ेगा, उसकी समस्याएं उलझेंगी और हर ओर शोषण और ज़ुल्म का वातावरण होगा। जब निराशा के बादल चारों ओर छा जायेंगे, तो उस समय मानव को 'दीने इस्लाम' याद आयेगा और उसी समय उसके दिल में दीने इस्लाम की सही क़द्र पैदा होगी।

कहावत मशहूर है कि आदमी अपनी बुद्धि और पराये धन का अन्दाज़ा लगाने में सदैव ग़लती करता रहा है। जब इस्लाम पर आधारित विश्व-समाज टूट-फूट का शिकार हो गया तो कितने ही विचारकों ने सोचा कि हमारे पास बुद्धि है, उसके द्वारा अच्छी-से-अच्छी जीवन-प्रणाली बना सकते हैं। बड़े-बड़े बुद्धिजीवी मैदान में आए और सर जोड़ कर बैठे। बड़े परिश्रम के बाद व्यक्ति की आज़ादी (Indivedual Liberty) और फ़राख़दिली (Libearlism) के आधार पर पूँजीवादी धर्मनिरपेक्ष जनतन्त्र (Capitalist Secular Democracy) का दीन बना लाए। इस दीन की वह तारीफ़ की गई कि लोग समझने लगे कि मानव-जीवन के लिए यदि कोई जीवन-सिद्धांत हो सकता है तो यही है और मानव की उन्नति की अन्तिम सीमा यही है। थोड़ा ही समय बीता था कि सारी क़लई खुल गई और प्रोपगंडे का भांडा फूट गया और दुनिया को मालूम हो गया कि इस जीवन-सिद्धांत ने दुनिया को अत्याचार और कलह से भर दिया है।

इस जीवन-सिद्धान्त के असफल होने से हमारे बुद्धिजीवियों को धक्का तो अवश्य लगा, किन्तु वे निराश नहीं हुए और एक दूसरा जीवन-सिद्धांत बनाने में लग गए। थोड़े ही समय के पश्चात एक दूसरा जीवन-सिद्धांत सामाजिक न्याय (Social Justice) और कॉम्यूनिज़्म (Communism) के नाम से बना लाए। इस बार एक नया तरीक़ा अपनाया गया। जिस क्षेत्र में यह जीवन-सिद्धांत लागू हुआ उसको पूरी दुनिया से काट दिया गया। न अन्दर की सूचना बाहर जा सकती थी और न बाहर की सूचना अन्दर आ सकती थी। प्रोपगंडा आरम्भ हुआ कि निजी मिल्कियत (Private Property) ही समाज के बिगाड़ की ज़िम्मेदार है और कम्युनिज़्म जीवन-सिद्धांत में निजी मिल्कियत को समाप्त कर दिया गया है। अब न कोई ज़मींदार है और न कोई कारख़ानेदार। देश की सारी मिल्कियत स्टेट की है और स्टेट में सब बराबर हैं। कम्युनिस्ट देश तो जनता का स्वर्ग है।..... यह जीवन-सिद्धांत एक शताब्दी भी पूरी न कर पाया था कि समाप्त हो गया। रूस में जहाँ इस जीवन-सिद्धांत को अपनाया गया था, वहीं उसका श्मशान भी बन गया।

रूस और अमेरिका सारी दुनिया का शोषण कर रहे थे और दोनों ही महाशक्ति (Super Power) थे। दुनिया के मैदान में दोनों एक-दूसरे के प्रतिपक्ष थे। छोटे-छोटे देशों के लिए दोनों मुसीबत बने हुए थे। यह अवश्य था कि जब रूस किसी छोटे और कमज़ोर देश को हड़प करना चाहता, तो वह अमेरिका की शरण ले लेता और जब अमेरीका किसी कमज़ोर देश को हड़प करना चाहता, तो वह रूस की शरण में चला जाता। बेचारे छोटे और कमज़ोर देश बड़े संकट में फंसे हुए थे।

अब जबकि मैदान में केवल अमेरिका ही रह गया है और वह एक सुप्रीम पावर है। अब बेचारे छोटे और कमज़ोर देश अमेरिका के ज़ुल्म और शोषण से बचने के लिए किसकी शरण लें?

ज़मींदारी के समय की कहावत है— "यदि ज़मींदारी करनी है, तो प्रजा को इतनी फटी हालत में रखना होगा कि जब उसको दिन भर की मेहनत के बाद शाम को जो मज़दूरी अनाज के रूप में मिले वह आधी ही उसके घर तक पहुंच सके। उसके कपड़े इतने फटे हों कि आधा अनाज रास्ते ही में गिर जाय।" आज अमेरिका इसी फ़ार्मूले पर काम कर रहा है। सारे छोटे और कमज़ोर देशों

को ज़ुल्म और शोषण की चक्की में पीस रहा है। यदि कोई ज़रा उठना चाहता है, तो तत्काल कुचल दिया जाता है। इस ज़ुल्म के जाल से निकलने का कोई मार्ग दिखलाई नहीं दे रहा है। हर ओर निराशा के बादल छाए हुए हैं। अब लोगों को महात्मा गाँधी, जय प्रकाश नारायण, रविन्द्रनाथ टैगोर इत्यादि की बातें याद आ रही हैं। उन्होंने कहा था कि मानव के बनाए दीन में ज़ुल्म ही ज़ुल्म है। ईश्वरीय जीवन-सिद्धांत (इस्लाम) ही में मानव का कल्याण है।

दीने इस्लाम की पुनः स्थापना :– आज से पहले लोग मान रहे थे कि जगत् का कोई बनाने वाला नहीं है। यह स्वयं बन गया और स्वयं चल भी रहा है। ऐसी दशा में दुनिया न तो इस्लाम-धर्म को स्वीकार कर सकती थी और न विश्व-समाज का प्रश्न उठ सकता था। आज दुनिया का नक़्शा ही बदला हुआ है। पढ़ी-लिखी दुनिया का अधिकांश भाग मान रहा है कि जगत् का कोई बनाने वाला है। यद्यपि लोगों ने उसके अलग-अलग नाम रख छोड़े हैं, लेकिन भिन्न-भिन्न नाम होते हुए भी एक बनाने वाले को मान लेना बड़ा महत्व रखता है। विश्व-समाज बनाने के लिए यह एक बहुत बड़ी बुनियाद है। यह विश्व-समाज बनाने की ओर पहला क़दम है।

क़ुरआन से पहले भी मानव के मार्गदर्शन के लिए ईश्वरीय ग्रंथ आते रहे हैं। परन्तु उनमें से एक भी आज सुरक्षित नहीं है। उनमें ईश्वरीय वाक्य के साथ मानव-वाक्य इस क़द्र मिश्रित हो गए हैं कि इन्हें अलग करना असम्भव है।

एक पण्डित ने 'वेद' के बारे में कहा है कि "एक रत्ती शक्कर में सेरों नमक पिस चुका है।" आज पूरे संसार में क़ुरआन ही अकेली किताब है जो पूर्ण रूप से सुरक्षित है।

क़ुरआन को सुरक्षित तो सभी मान रहे हैं, किन्तु अधिकतर लोग उसको ईश्वरीय ग्रंथ मानने को तैयार नहीं। क़ुरआन का सारा महत्व इसी में है कि वह ईश्वरीय ग्रंथ है।[१] विश्व-समाज के निर्माण की यह दूसरी अटल बुनियाद है कि यह क़ुरआन उसी ईश्वर का ग्रंथ है, जिसको सारी दुनिया मान रही है। केवल

१- इस विषय में मेरी तीन किताबें हैं– क़ुरआन ख़ुदा का कलाम है (उर्दू में), क़ुरआन सुरक्षित है (हिन्दी में), मधुर सन्देश (हिन्दी में) इन पुस्तकों को पढ़ने के बाद पूर्ण विश्वास हो जाता है कि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रंथ है।

क़ुरआन ही वह ग्रंथ है जो ईश्वरीय भी है और सुरक्षित भी।

दुनिया जानती है कि यह ईश्वरीय ग्रंथ, क़ुरआन मानव को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा मिला है। अत: हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ईश-दूत हैं।— विश्व-समाज बनाने की यह तीसरी बुनियाद है।

ईश्वर, अन्तिम ईश्वरीय ग्रंथ (क़ुरंआन) और अन्तिम ईश-दूत (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) यह तीन अटल बुनियादे हैं, जिनके आधार पर विश्व-समाज का निर्माण आसानी से हो सकता है।

जब तक ईश्वरीय जीवन-सिद्धांत (दीने इस्लाम) स्थापित न हो जाए, विश्व समाज की दाग़बेल नहीं डाली जा सकती। इस मार्ग की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि मुसलमान भी इस्लाम को एक मज़हब मान रहा है। जब तक दुनिया इस्लाम को एक दीन न माने, इस्लाम को जीवन-प्रणाली के रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता।

जब से इस्लामी राज्य टूट-फूट का शिकार हुआ और उसकी जगह दीने तानाशाही ने ले ली— इस्लाम केवल नमाज़, रोज़ा तक सीमित होकर रहा गया है और दुनिया समझने लगी कि इस्लाम भी एक साधारण मज़हब है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि पूरी दुनिया में इस्लाम को 'दीन' के रूप में स्थापित करने के लिए आज संगठित रूप से आन्दोलन चल रहा है।

जब तक यह आदर्श विश्व समाज की स्थापना के लिए समाज के हर क्षेत्र से कुछ लोग नहीं उठेंगे, तब तक यह सारी बातें सिर्फ़ किताब की शोभा ही बनी रहेंगी और यह भी स्पष्ट है कि इस प्रकार के समाज की स्थापना किए बिना व्यक्ति के जीवन और पूरे मानव समाज में बुराइयों को स्थायी रूप से समाप्त नहीं किया जा सकता। अब समय आ चुका है कि बिना किसी भेद-भाव के इस्लामी बुनियादों और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आदर्शों के अनुसार इस ख़ार (काँटा) रूपी समाज को गुलज़ार (फूल) बनाने के लिए पूरे तन, मन, धन से निकल पड़ें और लोक तथा परलोक की सफलता के पात्र बन जाएं।

अनमोल पुस्तकें

❒ **अनूदित कुरआन मजीद** 80.00

रूपान्तर : मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

कुरआन मजीद का सरल हिन्दी में अनुवाद, साथ ही संक्षिप्त व्याख्या भी।

❒ **इस्लाम एक अध्ययन** 3.00

लेखक : डा0 जमीला आली जाफ़री

इस्लाम अध्ययन का निचोड़ और इस्लाम को समझने में सहायक।

❒ **पैगम्बरे इस्लाम** 3.00

लेखक : प्रो0 रामा कृष्ण राव

हज़रत मुहम्मद (स0) पर एक संक्षिप्त लेख, अंग्रेजी में भी उपलब्ध।

❒ **डा0 अम्बेडकर और इस्लाम** 3.00

लेखक : आर0 एम0 आदिल

❒ **आखिरी पैगम्बर** 1.50

लेखक : डा0 सैय्यद मुहम्मद इकबाल

❒ **शार्ट कट उर्दू कोर्स** 5.00

हिन्दी के माध्यम से उर्दू सीखने की उचित पुस्तक।

प्रौढ़ शिक्षा सिद्धांतों पर आधारित।

❒ **पवित्र कुरआन एक नज़र में** 10.00

पवित्र कुरआन की मुख्य-मुख्य शिक्षाओं का संकलन।

❒ **मधुर सन्देश** 3.00

लेखक : डा0 इल्तिफ़ात अहमद

❒ **इस्लाम का परिचय** 1.50

लेखक : अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी

❒ **दास्ता से इस्लाम की ओर** 10.00

लेखक : कोडिक्कल चेलप्पा

पुस्तक सूची मुफ़्त मंगायें

मधुर सन्देश संगम

अबुल फ़ज़ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-25